



**NEERAJ®**

**M.P.S.E.-3**  
**पश्चिमी राजनीतिक चिंतन**  
**(प्लेटो से मार्क्स तक)**  
**( Western Political Thought: Plato to Marx )**

**Chapter Wise Reference Book**  
**Including Many Solved Sample Papers**

*Based on*

**I.G.N.O.U.**  
**& Various Central, State & Other Open Universities**

*By: A Panel of Educationists*



**NEERAJ**  
**PUBLICATIONS**

*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: [info@neerajbooks.com](mailto:info@neerajbooks.com)

Website: [www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

**MRP ₹ 320/-**

Content

# पश्चिमी राजनीतिक चिंतन

( प्लेटो से मार्क्स तक )

## ( Western Political Thought: Plato to Marx )

Question Paper—June-2024 (Solved) .....	1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) .....	1
Question Paper—June-2023 (Solved) .....	1
Question Paper—December-2022 (Solved) .....	1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) .....	1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) .....	1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) .....	1
Question Paper—December, 2019 (Solved) .....	1
Question Paper—June, 2019 (Solved) .....	1-4
Question Paper—December, 2018 (Solved) .....	1
Question Paper—June, 2018 (Solved) .....	1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) .....	1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) .....	1-2

---

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन का महत्त्व .....	1
2.	प्लेटो .....	8
3.	अरस्तू .....	30
4.	सेंट ऑगस्टाइन एवं सेंट थॉमस एक्विनास .....	54
5.	निकोलो मैकियावेली .....	69
6.	थॉमस हॉब्स .....	82
7.	जॉन लॉक .....	95

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
8.	जीन जेक्स रूसो .....	107
9.	एडमंड बर्क .....	120
10.	इमेनुअल काण्ट .....	125
11.	जेरमी बेंथम .....	131
12.	एलेक्सिस डि टॉकविल .....	142
13.	जे.एस. मिल .....	145
14.	जॉर्ज विलियम फ्रेडरिक हीगेल .....	157
15.	कार्ल मार्क्स .....	166



**Sample Preview  
of the  
Solved  
Sample Question  
Papers**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक) **M.P.S.E.-3**  
(Western Political Thought : Plato to Marx)

समय : 2 घण्टे ]

] अधिकतम अंक : 50

नोट : प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

## खण्ड-I

प्रश्न 1. पश्चिमी राजनीतिक चिंतन की प्रासंगिकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-5, 'पश्चिमी राजनीतिक चिंतन का महत्त्व', पृष्ठ-6, 'पश्चिमी राजनीतिक चिंतन की प्रासंगिकता' तथा पृष्ठ-7, प्रश्न 3

प्रश्न 2. अरस्तू के राजनीतिक चिंतन में राजनीति तथा नैतिकता के बीच संबंधों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-30, 'प्रस्तावना' तथा पृष्ठ-34, अरस्तू की राजनीतिक एवं नैतिकता संबंधी धारणा'

प्रश्न 3. जॉन लॉक के प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-97, 'जॉन लॉक की प्रकृति की अवस्था एवं प्राकृतिक अधिकार संबंधी अवधारणा'

प्रश्न 4. कानून तथा राज्य पर थॉमस ऐक्वीनास (St. Aquinas) के विचारों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-63, 'विधि और राज्य के संबंध में थॉमस ऐक्विनास की धारणा'

प्रश्न 5. "आदमी स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन हर जगह वह जंजीर में है।" इस संदर्भ में रूसो का 'अधिकार के साथ स्वतंत्रता' को समेटने का प्रयास है।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-116, प्रश्न 1

## खण्ड-II

प्रश्न 6. जेरेमी बेंथम (Jeremy Bentham) के उपयोगितावाद सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-138, प्रश्न 2

प्रश्न 7. कांत (Kant) के अधिकार के सार्वभौमिक कानून की संकल्पना का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-जर्मन दार्शनिक इमेनुअल काण्ट को संसार के महान दार्शनिकों में स्थान दिया जाता है। उनकी तुलना प्लेटो, अरस्तू तथा हीगेल से की जाती है। 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं सदी के प्रारंभ में जर्मनी में जो दार्शनिक क्रांति हुई, इसके लिए वैचारिक आधार तैयार करने में काण्ट का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनका जन्म 1724 ई. में जर्मनी कॉनिग्सवर्ग नामक शहर में हुआ था। काण्ट बचपन से ही मेघावी एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् इन्होंने तीस वर्ष से अधिक समय तक कॉनिग्सवर्ग विश्वविद्यालय में न्यायशास्त्र एवं अध्यात्मशास्त्र पढ़ाया। इनका जीवन अत्यंत साधारण एवं यांत्रिक रूप से व्यवस्थित था।

काण्ट के अनुसार राज्य सर्व-शक्तिमान, दोष शून्य और ईश्वरीय होता है। व्यक्ति और राज्य के संबंध को स्पष्ट करते हुए काण्ट कहते हैं कि राज्य की सर्वोच्च सत्ता के केवल अधिकार होते हैं, उनका प्रजा के प्रति कोई कर्तव्य नहीं होता। इसी तरह वे कहते हैं कि मनुष्य को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए इसलिए नहीं कि यह स्वास्थ्य, धन कीर्ति, शक्ति एवं अन्य किसी वस्तु की कामना करता है बल्कि इसलिए कि वह इसके वास्तविक स्वरूप का नियम है और ऐसा करते हुए वह शाश्वत सत्य को प्राप्त करता है।

लेकिन काण्ट व्यक्ति की गरिमा को महत्त्व प्रदान करते हैं और उनका मानना है कि मानवता एक साध्य है जिसे साधन के रूप में कभी व्यवहार में नहीं लाया जाना चाहिए। व्यक्तित्व के विकास के लिए वे अधिकार को आवश्यक मानते हैं, किन्तु उनके

# QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक)  
(Western Political Thought : Plato to Marx)

M.P.S.E.-3

समय : 2 घण्टे ]

[ अधिकतम अंक : 50

नोट : प्रत्येक भाग में कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

## भाग-I

प्रश्न 1. राजनीतिक चिंतन को राजनीतिक सिद्धांत तथा राजनीतिक दर्शन से कैसे अलग किया जाता है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'राजनीतिक चिंतन', 'राजनीतिक दर्शन और राजनीतिक सिद्धान्त में अंतर'

प्रश्न 2. प्लेटो के "न्याय के सिद्धान्त" का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'प्लेटो का न्याय सिद्धान्त'

प्रश्न 3. 'राज्य, संपत्ति और दासता' पर संत ऑगस्टीन के विचारों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-57, 'ऑगस्टाइन की राज्य और सरकार संबंधी धारणा', 'ऑगस्टाइन की संपत्ति संबंधी अवधारणा' तथा पृष्ठ-58, 'ऑगस्टाइन की दासता संबंधी अवधारणा'

प्रश्न 4. राजनीति तथा सरकार के स्वरूपों पर निकोलो मैकियावेली के विचारों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-80, प्रश्न 3 तथा प्रश्न 4

प्रश्न 5. मानव प्रकृति तथा संप्रभुता पर हॉब्स की अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-92, प्रश्न 1 तथा प्रश्न 2

## भाग-II

प्रश्न 6. फ्रांसीसी क्रांति पर एडमंड बर्क के विचारों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-120, 'प्रस्तावना' तथा पृष्ठ-122, 'बर्क द्वारा फ्रांसीसी क्रांति की आलोचना'

प्रश्न 7. इमैनुअल काण्ट के राजनीतिक दर्शन के चरित्र को अंतर्राष्ट्रीय बयों माना जाता है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-128, 'काण्ट की स्थायी शांति की अवधारणा'

प्रश्न 8. लोकतंत्र, क्रांति तथा आधुनिक राज्य पर टॉकविले के विचारों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-142, 'डि टॉकविले का लोकतंत्र' क्रांति एवं आधुनिक राज्य के संबंध में विचार'

प्रश्न 9. जे.एस. मिल के व्यक्तिगत स्वतंत्रता के औचित्य पर उनके विचारों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-146, 'मिल के स्वतंत्रता संबंधी विचार'

प्रश्न 10. मार्क्स के 'अलगाव के सिद्धान्त' पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-15, पृष्ठ-167, 'कार्ल मार्क्स की अलगाव की संकल्पना'



# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन

## पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन का महत्त्व

1

### प्रस्तावना

मनुष्य का इतिहास यह स्पष्ट करता है कि राजनीतिक चिन्तन का क्रमिक विकास हुआ है। इनके अध्ययन से वर्तमान इतिहास की घटनाओं और समस्याओं को समझने में सहायता मिलती है। साथ ही हम राजनीतिक जीवन के मानदंड, राजनीतिक आचरण एवं राजनीतिक चेतना आदि की आधारभूत तत्त्वों से संबंधित अवधारणाएँ जो व्यवस्थित और किसी न किसी रूप में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, के विकास की गति की जानकारी प्राप्त करते हैं। राजनीतिक चिन्तन एक दिशा निर्देशक के रूप में कार्य करता है। इसके आधार पर नए समाज के निर्माण की रूप-रेखा को अंतिम रूप देने में सहायता मिलती है।

किसी भी आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के लिए इसके अध्ययन की प्रासंगिकता इस बात में है कि वे उसके प्रत्ययों, संकल्पनाओं, बनावट एवं भाषा आदि के ऐतिहासिक ढाँचे में काम करते हैं और यथानुरूप संज्ञानात्मक सामाजिक निस्स्यकों से छनकर वे आधुनिक युग के राजनीतिक सिद्धांत के ताने-बाने में सहज ही समाहित हो जाते हैं। यह आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के लिए प्रयोगशाला की भूमिका ही नहीं निभाता बल्कि एक परीक्षण स्थल भी है जहाँ विभिन्न राजनीतिक विचार जाँचे-परखे जाते हैं। राजनीतिक चिन्तन की ऐतिहासिक विकास की विशेषताएँ, प्रवृत्तियों और नियम

संगतियों का सर्वांगीण विश्लेषण और गहन सामान्यीकरण राज्य और विधि विषयक आधुनिक सैद्धांतिक ज्ञान के विकास एवं परिष्करण की युक्ति तथा प्रणालियों के पुर्वानुमान के लिए आवश्यक है। इसके माध्यम से राज्य तथा विधि विषयक कई सामान्य मामलों को सफलतापूर्वक हल किया जा सकता है।

आज की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति में प्रत्येक राजनीतिक सिद्धांत की संकल्पनाएँ नया अर्थ ग्रहण कर रही हैं। इस युग के ऐतिहासिक विचारकों का प्रत्यक्ष उद्देश्य अतीत में आधुनिक विचारों का भ्रूण खोजना होता है। इससे राजनीतिक सैद्धांतिक ज्ञान के मूल तत्त्वों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक कारक, राज्य की अवस्था, शक्ति का विभाजन, प्रतिनिधित्व के प्रकार तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंधित संरचनाओं व संस्थाओं इत्यादि के ज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास के नियमों को स्पष्ट करने की है ताकि मुख्य तथ्यों को प्रकाश में लाया जा सके।

इस प्रकार यह एक महत्वपूर्ण मानसिक व्यायाम है, जो राजनीतिक पहलू पर ध्यान केंद्रित कर राजनीतिक क्षेत्र में हमारे ज्ञान को परिपक्व बनाता है और राजनीतिक जीवन के सर्वोत्तम रूप के संबंध में वास्तविकता का अनुभव कराते हुए नवीन उत्साह, विषय के प्रति संचारित करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक दर्शन अनेक कालों एवं महान विचारकों का परिमार्जित विवेक है।



## राजनीतिक चिन्तन का अभिप्राय क्या है?

राजनीतिक चिन्तन अतीत के ज्ञान, राजनीतिक संस्थाओं एवं पद्धतियों के साथ राज्य संबंधी मौलिक प्रश्नों पर सर्वमान्य-सिद्धांतों की एक विचार शृंखला है। यह व्यापक रूप में मनुष्य के राजनीतिक जीवन तथा विशिष्ट रूप में राज्य और सरकार का अध्ययन है। यह कहा जाता है कि इसका इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मनुष्यों के बीच पारस्परिक सहयोग के लिए किए गए प्रथम प्रयास। वेपर के अनुसार राजनीतिक चिन्तन वह चिन्तन है जिसका संबंध राज्य, राज्य के आकार राज्य के स्वभाव तथा राज्य के लक्ष्य से है। इसका मुख्य कार्य समाज में मानव का नैतिक पर्यवेक्षण करना है। इसका उद्देश्य राज्य के अस्तित्व, स्थिरता तथा नित्यता के विवरण प्रस्तुत करना ही नहीं है। वरन् राज्य क्या है और किसी को राजाज्ञा का पालन क्यों करना चाहिए, राज्य का कार्यक्षेत्र क्या है और कोई राजाज्ञा का उल्लंघन कब कर सकता है तथा राज्य के बिना अपूर्ण मानव की शक्ति क्या रह जाती है, इत्यादि का उत्तर देने के लिए यह चिरकाल से प्रयत्नशील है।

लेकिन यह इन प्रश्नों का कोई भी सर्वसम्मत उत्तर नहीं प्रदान कर सका क्योंकि राजनीतिक जीवन का उद्देश्य सामान्य जीवन से अलग नहीं है। अतः राजनीतिक चिन्तन एवं राजनीतिक सिद्धांत के प्रश्नोत्तर अंततः हमारे उचित-अनुचित की धारणाओं के धर्म-कांटे पर ही तौले जाते हैं। इसलिए राजनीतिक चिन्तन नैतिक दर्शन की ही एक शाखा है। इसके मौलिक सिद्धांतों के विषय में सदा मतभेद रहा है और संभवतः सदा रहेगा क्योंकि इसमें विभिन्न राजनीतिक चिंतकों के विचारों-मूल्यांकों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन होता है और वह उस युग की परिस्थितियों के प्रति वास्तविकता के मूल्यांकन का तत्त्व लिए होता है। उसका मूल्यांकन समाज में क्रियाशील एक ऐसे व्यक्ति के मूल्यांकन होता है, जिसके विचार और भावनाएँ उसके जीवन की परिस्थितियों द्वारा निर्मित हैं।

इस प्रकार राजनीतिक चिन्तन में पक्षधरता होती है। लेकिन यह राजनीतिक संघर्ष के साधन के साथ उसके समाधान एवं राजनीति के मुख्य तत्त्वों, यथा-समाज और राज्य के राजनीतिक गठन, उनकी नीति, शासन के स्वरूप विषयक अवधारणाएँ आदि इसके अनिवार्य घटक होते हैं। इसलिए राजनीतिक चिन्तन अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाली कड़ी ही नहीं बल्कि इसमें राजनीतिक सिद्धांतों का इतिहास और राज्य एवं विविध विषयक आधुनिक सिद्धांतों के बीच अविच्छिन्नता बनाए रखने वाली शक्ति भी होती है। इससे राजनीति, राज्य और विधि से संबंधित प्रश्नों पर कारगर वैचारिक संघर्ष चलाने के लिए तर्कपूर्ण विपुल साहित्य की जानकारी प्राप्त होती है।

## राजनीतिक चिन्तन, राजनीतिक दर्शन और राजनीतिक सिद्धांत में अंतर

राजनीतिक विषयों पर गहन विचार-विमर्श एवं मीमांसा राजनीतिक चिन्तन है। इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि युगों से इस पर चिन्तन चल रहा है और प्रत्येक युग की सामान्य मानसिक पृष्ठभूमि की जानकारी मिलती है। भले ही प्राचीन काल में राजनीतिक चिन्तन कम लोगों तक ही सीमित रहा, लेकिन राजनीतिक चिंतक व्यावहारिक राजनीति से दूर रह कर अपने युग की राजनीतिक समस्याओं तथा राजनीतिक व्यवस्थाओं का यथार्थ चित्र व्यवस्थित ढंग से लेखबद्ध करते हैं।

राजनीतिक चिन्तन एवं राजनीतिक दर्शन शब्द का प्रयोग एक दूसरे के लिए किया जाता है। वैसे भी राजनीतिक दो शब्दों के मेल से बना है। राजनीति और दर्शन जिसमें दर्शन का अर्थ समग्रता का ज्ञान है। इसका प्रतिपाद्य विषय अखिल विश्व है, जिसका मौलिक और व्यापक विवेचन यह करता है। राज्य विश्व का एक अंग है, इसलिए दर्शन उसके मौलिक विषयों की विवेचना करता है। अतः राज्य से संबंधित इस दर्शन को राजनीतिक दर्शन कहा जाता है। स्मरणीय है कि राजनीतिक दर्शन का संबंध राजनीतिक संस्थाओं की अपेक्षा उन विचारों और आकांक्षाओं से है, जो उन समस्याओं में सन्निहित है। दूसरे शब्दों में राजनीतिक दर्शन का संबंध तथ्य कैसे घटित होता है, के वनिस्पत उस विवेचन से है कि क्या घटित होता है और क्यों घटित होता है। इस प्रकार राजनीतिक दर्शन राज्य की मूल समस्याओं पर विचार करता है तथा राज्य के अस्तित्व की व्याख्या प्रस्तुत करता है। यह स्वयं संस्थाओं का अध्ययन नहीं करता। इसके क्षेत्र में अंतर्गत राज्य की उत्पत्ति, उसकी प्रकृति, अधिकार और कर्तव्य एवं राजनीतिक सत्ता की प्रकृति इत्यादि विषय सम्मिलित होते हैं। इसलिए राजनीतिक दर्शन मुख्यतः सैद्धांतिक है, क्रियात्मक नहीं। इसका संबंध सामान्य और व्यापक बातों से है न कि विशेष बातों से।

लेकिन राजनीतिक सिद्धांत वस्तुतः राजनीतिक परिस्थितियों के परिणाम होते हैं और वे राजनीतिक विकास के पीछे निहित उद्देश्यों के प्रतिबिम्ब होते हैं। राजनीतिक ज्ञान की समस्त पद्धति में अधिकांश सैद्धांतिक योगदान राजनीतिक सिद्धांतों द्वारा किया जाता है, जो राजनीति विषयक सैद्धांतिक प्रस्थापनाओं की एक निश्चित समिष्ट होते हैं। राजनीतिक सिद्धांत अपने युग में प्रचलित सामाजिक संबंधों की उपज होते हैं। इसमें राजनीतिक ज्ञान के निश्चित रूपों एवं अभिव्यक्तियों का व्यवस्थापन किया जाता है। इसमें राजनीतिक मान्यताओं, आकांक्षाओं तथा आदर्शों की संघनित अभिव्यक्ति मिलती है तथा किसी निश्चित सामाजिक समूह के दृष्टिकोण से किए गए मूल्यांकन प्रदर्शित होते हैं। राजनीतिक सिद्धांत राज्य के गठन, राजनीतिक सत्ता, राजनीति, सामाजिक-आर्थिक जीवन तथा राजनीतिक कार्य प्रणाली इत्यादि से संबंध रखने वाला सिद्धांत है। साथ ही राजनीतिक सिद्धांत में विधि की शाखाओं से संबंधित कतिपय ऐसे दृष्टिकोण का समावेश होता है जिन्होंने अपने काल को देखते हुए विश्व दृष्टिकोण जैसा सैद्धांतिक सामान्य राजनीतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया था।

## राजनीतिक चिन्तन और राजनीति शास्त्र के मध्य संबंध

अनेक विचारक राज्य से संबंधित विचार व ज्ञान को राजनीतिक चिन्तन की संज्ञा देते हैं। उनका तर्क है कि राजनीति शास्त्र राजनीतिक चिन्तन का एक अंग है क्योंकि राजनीतिक चिन्तन अखिल विश्व का अध्ययन करता है जबकि राजनीतिशास्त्र विश्व के सिर्फ राजनीतिक पहलू का। इसी तरह वे कहते हैं कि राजनीतिक चिन्तन का प्रारंभ राजनीतिशास्त्र से पूर्व हुआ क्योंकि राजनीतिक चिन्तन की मौलिक मान्यताओं पर ही राजनीति शास्त्र आधारित है। वस्तुतः राजनीतिक चिन्तन राजनीति शास्त्र को आधार प्रदान करता है। राजनीतिक चिन्तन के मंथन के बाद ही राजनीति शास्त्र को प्राप्त किया जाता है अर्थात् राजनीतिक चिन्तन का संबंध उस विषय के आधारभूत सिद्धांतों तथा अनिवार्य लक्षणों से है, जो राजनीति शास्त्र के अध्ययन के क्षेत्र में आता है।

किन्तु राजनीतिक चिन्तन राज्य संबंधी ज्ञान को पूर्णता नहीं प्रदान करता बल्कि कुछ हद तक यह उसके क्षेत्र को सीमित कर देता है जबकि राजनीति शास्त्र का वृहत सैद्धांतिक, व्यावहारिक या क्रियात्मक पक्ष है। इसके व्यावहारिक पक्ष के अंतर्गत सरकार के स्वरूप, सरकार के संचालन की विधियों, विधि निर्माण, कूटनीतिक संबंध, युद्ध, अंतर्राष्ट्रीय संबंध के समझौते इत्यादि के संचालन के लिए व्यक्तिगत रूप से राज्य का अध्ययन किया जाता है। राजनीतिक चिन्तन इस व्यावहारिक पक्ष की विवेचना नहीं करता। इसका संबंध सिर्फ सैद्धांतिक एवं विचारात्मक पक्ष से है। इस प्रकार राजनीतिक चिन्तन राजनीति शास्त्र का सीमित ज्ञान प्रस्तुत करता है।

इसके अतिरिक्त राजनीतिक चिन्तन में एक अनिश्चितता का बोध होता है और उसमें राज्य की समस्याओं पर सिर्फ कल्पना के आधार पर विचार किया जाता है, जो वास्तविकता से दूर होती है। लेकिन राजनीति शास्त्र में सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक दोनों पहलुओं का अध्ययन किया जाता है और इससे व्यापकता का बोध होता है। इसमें आदर्श के साथ-साथ यथार्थ पर भी ध्यान दिया जाता है। शाश्वत के साथ-साथ समसामयिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है और सार्वभौम के साथ किसी घटना विशेष की भी विवेचना की जाती है।

## राजनीतिक चिन्तन की रूपरेखा

राज्य व सरकार के संबंध में विचार-विमर्श राजनीतिक चिन्तन का महत्वपूर्ण विषय रहा है। लेकिन राजनीतिक चिन्तन के विकास में सामाजिक वातावरण एवं राजनीतिक परिस्थितियों का बहुत प्रभाव पड़ा। ज्यादातर राजनीतिक चिन्तन का प्रादुर्भाव या तो तत्कालीन सत्ता की व्याख्या या उचित ठहराने या परिवर्तन की परिस्थितियों के सृजन के लिए हुआ। जैसे अनेक राजनीतिक विचारकों ने आदर्श के आधार पर भी राजनीतिक संस्थाओं का काल्पनिक चित्र अपने विचार के माध्यम से खींचा, जिसका उद्देश्य

अपने युग की समस्याओं का समाधान था। इस प्रकार राजनीतिक चिन्तन का मुख्य विषय-वस्तु राजनीति रही। वस्तुतः राज्य, समाज और मनुष्य के पारस्परिक संबंध राजनीतिक चिन्तन के प्रमुख अंग रहे। अतः राजनीतिक चिन्तन राजनीति का अध्ययन है।

राजनीति एक व्यापक मौलिक मानवीय क्रिया है। यह मनुष्यों के आपसी संबंधों का स्वभाविक परिणाम है। यह मानवीय क्रियाओं में सबसे अधिक मौलिक है तथा एक अनवरत व सदा परिवर्तनशील और सर्वव्यापी प्रक्रिया है। यह एक दशा को सुलझाने और उस संबंध में निर्णय लेने की क्रिया है। किन्तु यह विशेष स्थिति का परिणाम है। यह जैसे निर्णय लेने की प्रक्रिया से संबंधित है जिसमें राजनीतिक कार्य निहित हैं। राजनीतिक क्रिया के संबंध में ओकशॉट लिखते हैं कि “यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें मनुष्य एक नागरिक समुदाय के सदस्य के रूप में परस्पर संबंधित होने के कारण अपने समुदाय की व्यवस्थाओं एवं दशाओं की उपयोगिता के संबंध में सोचते-समझते हैं, उनमें परिवर्तन लाने के लिए सुझाव देते हैं, प्रस्तावित सुझावों को स्वीकार करने के लिए दूसरे को मनाते हैं और परिवर्तनों को आगे बढ़ाने के लिए स्वयं उसके अनुकूल व्यवहार करते हैं।” डेविड इस्टर्न राजनीति को “मूल्यों के अधिकारिक विनियोजन (authoritative allocation of values) के लिए कार्य रूप में देखते हैं। हैराल्ड लॉसवेल और राबर्ट डॉल ने इसे शक्ति के प्रयोग का एक रूप कहा है और जीन ब्लॉन्डेल एवं हर्बर्ट साइमन आदि विद्वान राजनीतिक क्रिया की व्याख्या के लिए विनिश्चय निर्माण (Decision making) को माध्यम मानते हैं। अर्थात् यह एक सर्वव्यापक प्रक्रिया है और यह राजनीतिक चिन्तन का मुख्य विषय है। यह अथाह एवं असीम सागर की तरह है जिसकी कोई दिशा निश्चित नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजनीतिक चिन्तन बहुमुखी, व्यापक, अविरल और सुसंगत सिद्धांत निर्माण का प्रयास है। इसमें यद्यपि कुछ राजनीतिक विचारकों ने अपनी समकालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप अपने को सीमाबद्ध किया तथापि कुछ विचारकों ने उन सीमाओं को तोड़ने का प्रयास किया और उन्होंने कुछ ऐसे सिद्धांत व विचारों का सृजन किया जिसका महत्त्व सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक है।

राजनीतिक चिन्तन के माध्यम से राजदार्शनिक, राजनीति की समस्याओं को देखने, समझने एवं सुलझाने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके राजनीतिक विचार तथा अधिकार तथा राज्य के प्रति उसके कर्तव्य एवं व्यक्ति की स्वतंत्रता, सरकार के स्वरूप, कानून, संप्रभुता आदि की विवेचना करना राजनीतिक चिन्तक का काम है। राजनीतिक चिन्तक सिर्फ तर्क के आधार पर ही नहीं बल्कि इतिहास के आधार पर भी अपने विचारों का सृजन करते हैं जिससे राजनीतिक क्षेत्र में ज्ञान वृद्धि के साथ मानव जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

#### 4 / NEERAJ : पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक चिन्तन की रूप-रेखा का क्षेत्र बहुत व्यापक है। यह मानव जीवन के एक विशेष पहलू, राजनीतिक पहलू का संपूर्ण अध्ययन कर राजनीतिक प्रश्नों को समझने और उनके समाधान व भविष्य के दिशा का निर्धारण करने हेतु राजनीतिक सिद्धांत का निर्माण कर हमें दिव्य दृष्टि प्रदान करता है।

#### पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन

पाश्चात्य राजदर्शन के विकास में यूनान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जैसे यूनानियों से पूर्व भी शासन एवं प्रजा का अस्तित्व था। लेकिन राजदर्शन के क्रमबद्ध वैज्ञानिक विश्लेषण का श्रेय इन्हें ही प्राप्त है। इसलिए यह कहा जा सकता है यूरोपीय सभ्यता एवं संस्कृति का स्रोत प्राचीन यूनान ही रहा और जीवन के प्रत्येक अंग में कम से कम पश्चिमी सभ्यता के लिए राजनीतिक संबंधों पर विचार-विमर्श के ज्ञान का आविर्भाव यूनान से हुआ। उन्होंने संसार को आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा और अपने तार्किक बुद्धि एवं विवेक के आधार पर प्रत्येक आश्चर्य के मूल तत्त्व के विषय में जानकारी प्राप्त करनी चाही। जानने की उत्सुकता की भावना से दर्शन की उत्पत्ति हुई।

प्राचीन यूनानी पौराणिक आख्यानों तथा विश्वासों, जिन पर मिथी एवं अन्य पूर्वी मिथकों का अधिक प्रभाव था, की तर्क बुद्धिपरक व्याख्या के प्रयास होमर और हेसियड की काव्य रचनाओं में मिलते हैं। उनमें देवताओं के नैतिक गुणों एवं लक्षणों का वर्णन है। लेकिन छठी शती ईसा पूर्व तक आते-आते विशेषतः थेलीज तथा सोलन के चिन्तन में व्यवहारिक जीवन और राजनीति एवं विधि से भी संबंध रखने वाले तर्क संगत चिन्तन का सृजन होने लगता है।

एथेंस के राजनीतिक-विधिक इतिहास में सोलन की भूमिका महत्वपूर्ण है। राजनीतिक तथा विधि संबंधी धारणाओं का आगे विकास पाइथागोरस और सोफिस्ट विचारकों द्वारा किया गया। सोफिस्टों का उद्भव पाँचवी सदी ईसा पूर्व में हुआ, जब यूनानी लोकतंत्र अपने चरमोत्कर्ष पर था। उन्होंने ज्यादातर रुचि राजनीति, अधिकार और विधि में दिखायी।

सुकरात (469-399 ईसा पूर्व) सोफिस्टों के घोर विरोधी थे, लेकिन उन्हें सोफिस्टों के कई विचारों को अपना पड़ा और इस प्रकार सोफिस्ट विचारकों द्वारा प्रारंभ किये गये शिक्षा प्रसार के कार्य अपने ढंग से आगे बढ़ते रहे। सुकरात अपने पीछे कोई लिखित रचना नहीं छोड़ गए, किन्तु प्लेटो ने उनके जिन मौखिक संवादों का चर्चा की है, उनमें नैतिक दर्शन की आधारशिला रखी गई है। इस दर्शन का एक महत्वपूर्ण भाग अधिकार, राजनीति और राज्य से संबंध रखता है। उन्होंने नैतिक आधार तत्त्व से मुक्त होकर नैतिक, राजनीति तथा विधि के वस्तुपरक स्वरूप के युक्तिसंगत, तार्किक, संकल्पना मूलक निरूपण पर ध्यान दिया तथा सुकरात नैतिक-राजनीतिक प्रश्नों की चर्चा को संकल्पनाओं तथा परिभाषाओं

के स्तर पर ले आते हैं। प्लेटो और अरस्तु ने सुकरात की दार्शनिक तथा सैद्धांतिक उपलब्धियों को आगे बढ़ाया।

प्राचीन रोम में यूनानी विचारधारा के प्रभाव से कई अन्य राजनीतिक-विधिक चिन्तन पद्धतियां विकसित हुईं। रोमन विधिक चिन्तन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि विधि शास्त्र का निर्माण है।

वस्तुतः प्लेटो और अरस्तु ने जिस क्रमबद्धता व क्षमता के साथ राजनीतिक सिद्धांतों का सृजन किया, उससे वे सार्वजनिक और सार्वदेशिक बन गए। इन्होंने ही सर्वप्रथम यह स्पष्ट किया कि व्यक्ति समाज में रहकर ही अपना विकास कर सकता है तथा व्यक्ति का समाज से पृथक कोई अस्तित्व नहीं है। इनका दृष्टिकोण व्यक्ति के जीवन के प्रति लौकिक और धर्मनिरपेक्ष था। प्लेटो के समक्ष ही संभवतः आदर्श राज्य की व्यवस्था का प्रश्न गंभीरता से उठा तथा सुकरात की हत्या की जो प्रतिक्रिया प्लेटो के मस्तिष्क में हुई उन्हीं से पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन या सिद्धांतों का जन्म हुआ।

प्लेटो और अरस्तु का चिन्तन तात्कालिक सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों एवं पूर्व के यूनानी दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित है। जो भावी राजनीतिक चिन्तन का स्रोत बनी। किसी विशेष समय में प्रत्येक दर्शन का विकास होता है। फिर क्रिया-प्रतिक्रिया या वाद-विवाद से पाश्चात्य दर्शन विकसित हुआ। यथा-प्लेटो से अरस्तु, बेंथम से मिल, हीगेल से मार्क्स। प्रत्येक विचारक ने अपने पूर्व के राजनीतिक विचारों की आलोचना कर अपना विचार रखने का प्रयत्न किया जिससे पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन का विकास होता चला गया। फलतः संपूर्ण पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन का आरंभ ही प्लेटो और अरस्तु के विचारों से होता है। कहा जाता है कि पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन का प्रत्येक विचारक या तो प्लेटो का अनुयायी होता है या अरस्तु का। इस कथन में बहुत ही सच्चाई है। आज भी राजनीति विज्ञान के अध्ययन से ऐसा स्पष्ट होता है कि ऐसी बहुत कम चीजे हैं, जो यूनानी विचारधारा के इन दोनों विचारकों के उत्कर्ष काल में नहीं थीं, अंतर विस्तार का है। मूल रूप से प्रायः सारे तत्त्व पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन के इन दिग्गज दार्शनिकों में मिल जाते हैं।

#### पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन, राजनीतिक संस्थाएँ एवं राजनीतिक प्रक्रियाएँ

सामाजिक राजनीतिक संस्थाओं एवं उनसे संबंधित प्रक्रिया की दृष्टि से पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन का अपना एक अलग स्थान है। यूनानी विचारकों ने नगर राज्य की संस्थाओं के संबंध में चिन्तन प्रारंभ किया। इन राजनीतिक आदर्शों में न्याय, स्वतंत्रता सवैधानिक शासन और विधि के प्रति सम्मान प्रमुख है। फिर मनुष्य सबसे अधिक व्यापक एवं शक्तिशाली संस्था राज्य की अपनी बुद्धि से समीक्षा करने लगा। राज्य के विषय में वह सचेत हो उठा और राजनीतिक संस्थाओं के स्वरूप एवं प्रकृति की व्याख्या करने लगा।